परफ़्यूम

Anybook

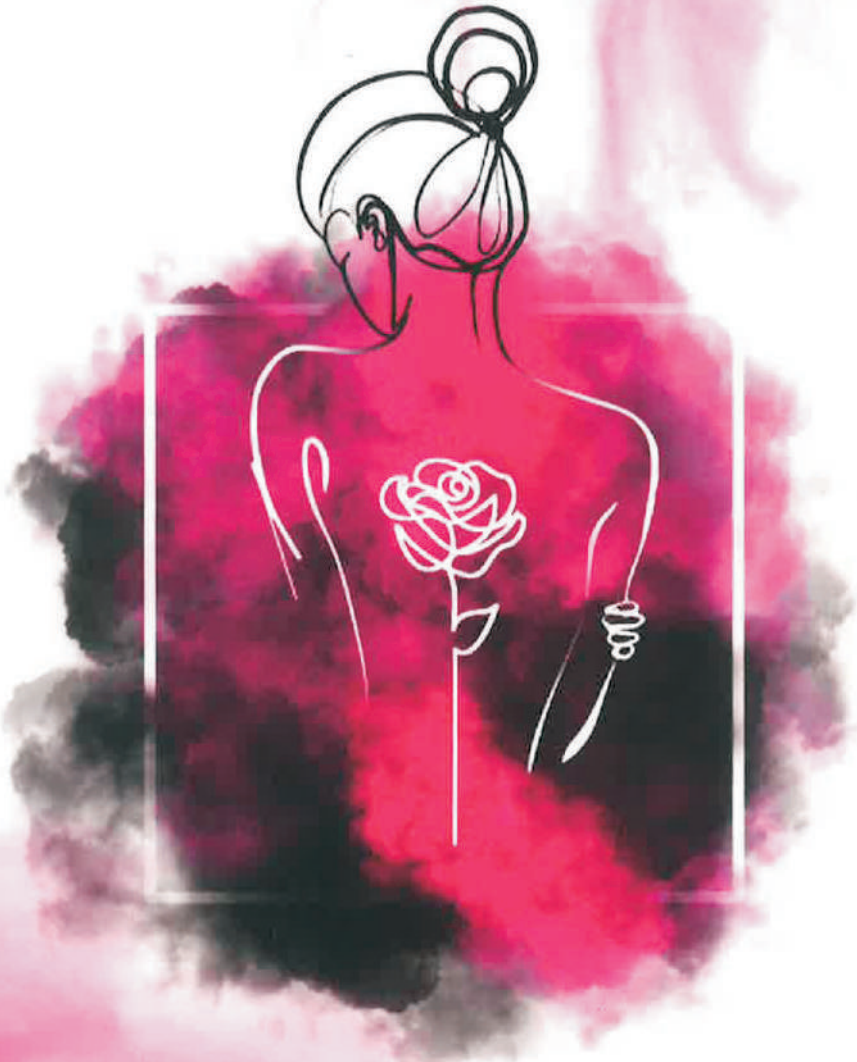

सिराज फ़ैसल ख़ान

नये डिक्शन का 'परफ़्यूम'

नज़्म का लुग़वी मआनी है- 'पिरोना'। नज़्म की कई क़िस्में हैं और इनमें से ही एक क़िस्म है- 'आज़ाद नज़्म'। सिराज फ़ैसल ख़ान की नज़्में आज़ाद नज़्मों की बेहतरीन मिसाल हैं। 1991 में पैदा हुए इस नौजवान शायर ने अपने गाँव और घर में साहित्यिक माहौल न होने के बावजूद अपने अंदर के शायर को खोने नहीं दिया बल्कि वक़्त के साथ उसे निखारा भी और सँवारा भी। 2014 में मेरे द्वारा संपादित साझा ग़ज़ल संकलन 'दस्तक' में नौजवान शायरों की ग़ज़लियात को संकलित करने के दौरान मैंने सिराज को पहली बार पढ़ा। तब से लेकर अपनी दूसरी किताब तक का सफ़र उन्होंने अपनी लगन और मेहनत के बल पर तय किया है। उनकी ग़ज़लों का पहला संकलन 'क्या तुम्हें याद कुछ नहीं आता' नाम से पहले ही मंज़र-ए-आम पर आ चुका है। अब उनका दूसरा संकलन 'परफ्यूम' आप तक पहुँच रहा है। यह नज़्मों का मज्मूआ है। नौजवान शायर सिराज फ़ैसल के इस मज्मूए में 40 से ज़ियादा नज़्में शामिल हैं और यह सभी नज़्में उनके हस्सास शायर होने की ताकीद करती हैं। इस आलेख में मैं उनकी कुछ चुनिंदा नज़्मों पर गुफ़्तगू करना चाहता हूँ।

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है। एक सच्चे साहित्यकार की ज़िम्मेदारी है कि वो समाज का समय-समय पर मार्गदर्शन करे। वो न केवल सवाल करे बल्कि उन सवालों के हल भी सुझाये। लेकिन सवाल करना यानी धारा के विपरीत जाना आसान काम नहीं है। George Prince का कथन है- "Another word for creativity is courage."

सिराज फ़ैसल की नज़्मों 'आक्रोश', 'महाज़', 'बेरोज़गार' और 'मुहब्बत ज़िंदाबाद' में हमें यह साहस दिखाई देता है। यह नज़्में 'Poetry with Purpose' की ख़ूबसूरत मिसाल हैं।

मुहब्बत करने वालों के समर्थन में आवाज़ बुलंद करती नज़्म 'मुहब्बत ज़िंदाबाद' का एक-एक बंद हमें झकझोरने के साथ सोचने पर मजबूर करता है-

मगर उल्फ़त के दुश्मन भूल जाते हैं
जुदा करने
बदन तक़सीम कर देने से टुकड़ों में
मुहब्बत मर नहीं सकती
रगों में वक़्त की वो दास्ताँ बनकर उतरती है
फ़िज़ाओं में महकती है
नये दिल ढूँढ़ लेती है
सदा आबाद रहती है
वो ज़िंदाबाद रहती है...!!

उनकी नज़्में 'बेरोज़गार-1' और 'बेरोज़गार-2' दो अलग-अलग ज़ावियों से बेरोज़गारी का दंश झेल रहे युवाओं के मन की पड़ताल करती हैं। पहली नज़्म में एक बेरोज़गार युवा का अंतर्द्वंद्व कुछ इस तरह सामने आता है-

अगर मैं दूर से भी
ट्रेन की आवाज़ सुनता हूँ
तो कोई अजनबी हैबत मुझे झकझोर देती है
अज़ीयत ख़ून के क़तरों में
यूँ करवट बदलती है
कि मैं टुकड़ों में बँटते रूह को महसूस करता हूँ...

दूसरी नज़्म बेरोज़गारी की वज्ह से जुदाई के मुहाने पर खड़े आशिक़ की आह है-

मेरी तुम्हारी तरह करोड़ों मुहब्बतों पर
यही तो ख़दशे बने हुए हैं
मगर यहाँ की हुकूमतों के

जो मसअले हैं वो और ही हैं
मैं अपनी जानिब से पूरी कोशिश
तो कर रहा हूँ
मगर नतीजे ख़िलाफ़ आयें तो क्या करूँ मैं...!!

'आख़िरी दुआ' नज़्म कोरोना के प्रकोप से पैदा हुई भयावह स्थिति का मार्मिक चित्रण करती है। अपनों से दूर, हॉस्पिटल में ज़िन्दगी और मौत के बीच झूलते मरीज़ों की लाचारी और बेबसी की तस्वीर सी बनाती यह नज़्म आख़िरी बंद तक पहुँचते-पहुँचते हमें त्याग और बलिदान जैसे उच्च मानवीय मूल्यों से रू-ब-रू करा जाती है-

आख़िरी साँस पर
मैंने रब से दुआ की
दुआ में मेरी काश इतना असर आ सके
बाद मेरे यहाँ
वेंटिलेटर पे जो शख़्स हो
लौटकर अपने घर जा सके...!!

समझौता-1 और समझौता-2 ऐसी नज़्में हैं जो हिज्र को एक नये रंग और नये ढंग से एक्सप्लोर करती हैं। यह नज़्में दिल के किसी कोने में रह जाने वाली पहली मुहब्बत की उस टीस पर रौशनी डालती हैं जिसे वक़्त का मरहम भी नहीं भर पाता-

वही थियेटर है कार्नर की वही दो सीटें
है फ़िल्म पर्दे पे कॉमेडी इक
सभी तमाशाई एक लय में ख़ुशी में डूबे हुए ठहाके लगा रहे हैं
जगह पे उसकी

हमारे पहलू में शख़्स बैठा हुआ है कोई
हमारे काँधे पे उसका सर है
हम अपने अंदर सिसक रहे हैं...!!

समझौता-2 की यह पंक्तियाँ पुरुषों की उस मनोदशा को बयान करती हैं जिस पर आमतौर पर समाज में बात नहीं होती है-

मैं वस्ल की सेज पे लेटा हूँ
पर हिज्र की आग दहकती है
ये बेल अज़ीयत की कैसी
मेरे जीवन से लिपटी है
इक लड़की मन से लिपटी है
इक लड़की तन से लिपटी है
ये मुझको चूमती रहती है... मेरे आँसू बहते जाते हैं

सिराज की शाइरी के रिवायती रंगों पर नज़र डालने पर हमें 'नॉस्टेल्जिया', 'परफ़्यूम', 'तख़लीक़', और 'मुहब्बत' जैसी कई नज़्में मिलती हैं जिन्हें बार-बार पढ़ने को जी चाहता है। जिस नज़्म पर किताब का नाम रखा गया है वो मासूमियत की चाशनी में डूबी मुहब्बत की नज़्म है। कैसे मुहब्बत में महबूब की हर चीज़ दिल को अज़ीज़ हो जाती है, यह नज़्म बहुत ख़ूबसूरती से इस जज़्बे को बयान करती है-

ये ख़ुशबू छूट ना जाये
इसी डर से
दोबारा मैंने उस स्वेटर को
पहना है
ना धोया है...!

नज़्म 'नॉस्टेल्जिया' मुहब्बत के अनोखे रंगों की पेंटिंग बनाती है। ख़ुद को तक़लीफ़ देकर अपने चाहने वाले को सताने और छेड़ने की तस्वीर खींचती यह नज़्म, तमाम नज़्मों में अपनी अलग जगह रखती है-

मैं कहता था अगर तुमने
मेरी प्यारी सी गुड़िया को
सताया तो
रुलाया तो
क़सम से मैं
तुम्हारा वो जो बाबू है मेरे अंदर
मैं उसकी जान ले लूँगा...!!

नज़्म 'हस्सास' एक सड़क दुर्घटना का मार्मिक चित्रण है। इसे पढ़ते हुए महसूस होता है कि जैसे आँखों के सामने फ़िल्म सी चल रही हो। इस संग्रह में ऐसी कई नज़्में हैं जिनको पढ़ते हुए इस बात पर यक़ीन पुख़्ता हो जाता है कि सिराज एक किरदार की तरह औरों के दुख को जीते हैं। उनकी पहली किताब की भूमिका में वरिष्ठ शायर 'मयंक अवस्थी' ने ठीक ही लिखा है कि- "सिराज की शायरी मुहब्बत, अना, वेदना और समकालीन संवेदना की शायरी है। एक जवान और हस्सास तबीअत आशिक़ इस शायरी में जगह-जगह पर मिलता है।"

नज़्म 'हस्सास' से यह बंद देखिए-

लेकिन मैं कैसे समझाऊँ
कि उसका आसेब मेरे ख़्वाबों में आकर
रोज़ यही कहता रहता है
मुझ पर ये एहसाँ करवा दो
घर पर मेरे बीवी-बच्चे भूखे होंगे
उन तक वो सब्ज़ी भिजवा दो...!!

इस संग्रह की कई नज़्मों के उनवान अंग्रेज़ी में हैं और उनमें भी कई लफ़्ज़ मनोविज्ञान से संबंधित हैं, जैसे; 'मेलनकाली', 'एनहिडोनिया' और 'रेमिनिसन्स'। यह नज़्में सब्जेक्ट और ट्रीटमेंट के दृष्टिकोण से दूसरी नज़्मों से अलग हैं। इसी तरह 'ज़ॉम्बी' उनवान से शामिल दो नज़्मों में इस्तेमाल किए गये प्रतीक भी मुख़्तलिफ़ हैं और वेस्टर्न लिटरेचर से प्रभावित हैं। उर्दू अदब और इंग्लिश लिटरेचर के बीच लिंक बनाती, उर्दू अदब में नये विषयों का समावेश करती यह कोशिशें नयी संभावनाएँ पैदा करती हैं।

'रेमिनिसन्स', 'वो मेरा कौन था' और 'मौलाना' उनवान वाली नज़्में पाबन्द नज़्में हैं। नज़्म 'मौलाना', लोकप्रिय और क्रांतिकारी पाकिस्तानी शायर 'हबीब जालिब' की नज़्म से इंस्पायर्ड है और उन्हीं को नज़्र की गयी है। इस नज़्म के यह शेर देखिए-

हिसाब इस बेहिसी का आपको देना पड़ेगा अब
बहुत दिन आप ने हुजरे में खा ली खीर मौलाना

ये फ़िरक़ा-वारियत का ज़हर, ये नफ़रत की तक़रीरें
नहीं होती है ऐसे क़ौम की ता'मीर मौलाना

इसके इलावा 'वादा', 'मुहब्बत', 'रंग' और 'बच्चा' जैसी कई संवेदनशील नज़्में रिवायती शायरी पर शायर के अधिकार का ऐलान करती हैं। 'दस्तक' के ज़रिये दस्तक देने वाला युवा शायर आज अपनी शाइरी के 'परफ़्यूम' के साथ मंज़र-ए-आम पर आ रहा है।

दुआ-गो
पवन कुमार (आई.ए.एस.)
अप्रैल, 2022